2047 तक विकसित भारत में कृषि आत्मनिर्भरता की कार्य योजना

पवन कुमार

मुख्य महाप्रबंधक, पतंजलि जैविक अनुसंधान संस्थान

भारत 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहा है, ऐसे में एक विकसित, समावेशी और सशक्त राष्ट्र- विकसित भारत की परिकल्पना एक साझा राष्ट्रीय आकांक्षा बन रही है। इस परिवर्तन के केंद्र में एक ऐसा क्षेत्र-एग्रीकल्चर या कृषि है, जिसने देश को भोजन दिया है, लाखों लोगों को रोजगार दिया है और भारत की सांस्कृतिक और आर्थिक रीढ़ बनाई हः

किन्तु भारत को 2047 तक वास्तव में एक विकसित देश बनने के लिए, इसकी कृषि को विकसित करना होगा। इस परिवर्तन को आगे बढ़ाने वाला मंत्र है 'आत्मनिर्भर कृषि'-सेल्फ रिलायेंट एग्रीकल्चर। यह परिकल्पना केवल खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के बारे में नहीं है, बल्कि किसानों को सशक्त बनाने, प्रथाओं को आधुनिक बनाने, पर्यावरण की रक्षा करने और एक सुदृढ़, प्रौद्योगिकी-सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के बारे में है जो ग्रामीण भारत में समृद्धि लाता है।

आत्मनिर्भर कृषि का अर्थ

आत्मनिर्भर कृषि खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता के विचार से परे है। यह एक ऐसी प्रणाली की कल्पना करता है, जहाँ भारतीय किसानों को स्वतंत्र निर्णय लेने, सीधे बाजारों तक पहुँचने, अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाने और जलवायु चुनौतियों का प्रभावी

ढंग से जवाब देने की स्वतंत्रता, संसाधन और आत्मविश्वास हो। यह कृषि को प्रणालीगत बाधाओं से मुक्त करने का प्रयास करता है - जैसे बिचैलियों का शोषण, सूचना का अभाव, मूलभूत संरचना की कमी और अस्थिर प्रथाएँ।

कृषि को परिवर्तन की आवश्यकता क्यों है

कृषि भारत के लगभग 43 प्रतिशत कार्यबल को रोजगार देती है, लेकिन सकल घरेलू उत्पाद में इसका योगदान केवल 15-18 प्रतिशत है। कई सुधारों और हरित क्रांतियों के बाद भी, छोटे और सीमांत किसान - जो सभी किसानों का 85 प्रतिशत से अधिक हिस्सा हैं - अभी भी कम उत्पादकता, खराब बाजार पहुँच और जलवायु झटकों के प्रति भेद्यता से जूझ रहे हैं।

यदि भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनना है, तो कृषि को अधिक लाभदायक, टिकाऊ और लचीला बनना होगा। इसके लिए कई मोर्चों पर प्रणालीगत परिवर्तन की आवश्यकता है-प्रौद्योगिकी, शिक्षा, मूलभूत संरचना, पर्यावरण और नीति।

आत्मनिर्भर कृषि के स्तंभ

1. उत्प्रेरक के रूप में प्रौद्योगिकी

फसल निगरानी के लिए ड्रोन से लेकर एआई-संचालित सलाहकार प्लेटफॉर्म तक, प्रौद्योगिकी हमारे खेती करने की विधियों को पुनः परिभाषित कर रही है। स्मार्ट सेंसर, सटीक कृषि, मंडी कीमतों के लिए मोबाइल ऐप और जलवायु पूर्वानुमान पहले से ही किसानों की योजना बनाने, खेती करने और बेचने की विधियों में क्रांतिकारी बदलाव ला रहे हैं। एग्रीटेक स्टार्टअप पहले से ही लहरें बना रहे हैं-किसानों को सीधे खरीदारों से जोड़ना, मृदा स्वास्थ्य निदान प्रस्तुत करना, यहां तक कि उन्हें डिजिटल रूप से ऋण तक पहुँचने में सहायता करना।

कृषि अनुसंधान, ग्रामीण नवाचार केंद्रों और डिजिटल कनेक्टिविटी में निवेश करना ऐसी तकनीकों को सुलभ और कम मूल्य बनाने की कुंजी है।

2. किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) को सुदृढ़ करना

किसानों को एफपीओ में सम्मिलित करने से उन्हें सौदेबाजी की शक्ति स्तर की अर्थव्यवस्था और बाजार तक पहुँच मिलती है। यह बिचैलियों पर निर्भरता को कम करने में सहायता करता है और किसानों को इनपुट, सेवाओं और उचित मूल्यों तक पहुँचने में सक्षम बनाता है। सरकारी सहायता, प्रशिक्षण और डिजिटल प्लेटफॉर्म एफपीओ के प्रभाव को और बढ़ा सकते हैं, विशेषकर सुदूरवर्ती और आदिवासी क्षेत्रों में।

3. मूलभूत संरचना और मूल्य संवर्धन

किसानों के लिए सबसे बड़ी समस्या फसल कटाई के बाद होने वाली हानि है, जो अपर्याप्त भंडारण, परिवहन और प्रसंस्करण के कारण होता है। कोल्ड चेन, गोदाम, ग्रामीण खाद्य प्रसंस्करण इकाइयाँ और खेत से कांटे तक आपूर्ति श्रृंखला विकसित करने से न केवल बर्बादी कम हो सकती है, बल्कि ग्रामीण रोजगार भी उत्पन्न हो सकते हैं और किसानों की आय में वृद्धि हो सकती है।

स्थानीय प्रसंस्करण और ब्रांडिंग को प्रोत्साहित करना-जैसे बाजरा, शहद, मसाले, जैविक उत्पाद - घरेलू और वैश्विक बाजारों में अपनी पैठ बना सकते हैं।

4. प्राकृतिक और संधारणीय खेती

भारत जलवायु-अनुकूल, पर्यावरण-अनुकूल कृषि में दुनिया का नेतृत्व कर सकता है। जैविक खेती, शून्य बजट प्राकृतिक खेती (जेडबीएनएफ), मिश्रित फसल और कृषि वानिकी जैसी प्रथाएँ इनपुट लागत को कम कर सकती हैं और मृदा स्वास्थ्य, जैव विविधता और लचीलापन को बढ़ावा दे सकती हैं।
जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर ड्रिप सिंचाई, वर्षा जल संचयन और जल शक्ति अभियान जैसी जल-कुशल तकनीकें आवश्यक हैं।

5. कृषि-शिक्षा, युवा जुड़ाव और ज्ञान साझा करना

आधुनिक कृषि, उद्यमिता और डिजिटल उपकरणों में ग्रामीण युवाओं को शिक्षित और कुशल बनाना किसानों और कृषि-नवप्रवर्तकों की अगली पीढ़ी को आकार देगा। कृषि विश्वविद्यालयों का पुनरुद्धार, ग्रामीण नवाचार प्रयोगशालाएँ स्थापित करना और स्टार्टअप और कृषि व्यवसाय को बढ़ावा देना ग्रामीण-शहरी विभाजन को पाट सकता है। सर्वोत्तम प्रथाओं का ज्ञान साझा करना वास्तव में किसी भी चीज से अधिक किसान को प्रेरित करता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह खेती को फिर से आकांक्षी बना सकता है।

6. समावेशी विकास और लैंगिक सशक्तिकरण

महिलाएँ भारतीय कृषि की रीढ़ हैं, फिर भी नीतियों और लाभों में प्रायः अदृश्य रहती हैं। आत्मनिर्भर कृषि दृष्टिकोण में लैंगिक समानता होनी चाहिए, जिससे महिला किसानों को भूमि अधिकार, ऋण, प्रशिक्षण और एफपीओ तथा सहकारी समितियों में नेतृत्व की भूमिकाएं मिल सकें। इसी तरह, आदिवासी, दलित और भूमिहीन समुदायों को मूल्य श्रृंखलाओं और निर्णय लेने वाली संरचनाओं में एकीकृत करना न्यायसंगत विकास के लिए आवश्यक है।

आत्मनिर्भर कृषि 2047 के लिए लक्ष्य

2047 तक, आत्मनिर्भर कृषि का लक्ष्य हैः

- सभी नागरिकों के लिए भूखमरी को समाप्त करना और पोषण सुरक्षा
- ग्रामीण गरीबी को कम करते हुए वास्तविक कृषि आय को दोगुना करना
- जैविक और उच्च मूल्य वाले उत्पादों के कृषि-निर्यात में वैश्विक नेता के रूप में भारत
- जलवायु-लचीले तरीकों और हरित खेती को व्यापक रूप से अपनाना
- सशक्त ग्रामीण समुदाय जो अर्थव्यवस्था को गर्व और सम्मान के साथ आगे बढ़ाते हैं

विकसित भारत 204 के लिए आत्मनिर्भर कृषिः एक साझा उत्तरदायित्व

विकसित भारत के विजन को प्राप्त करना सिर्फ किसानों या सरकारों का काम नहीं है। इसके लिए शोधकर्ताओं, उद्यमियों, नीति निर्माताओं, उपभोक्ताओं और नागरिक समाज की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है। शहरी नागरिक स्थानीय, जैविक और मौसमी उपज चुनकर, खाद्य अपशिष्ट को कम करके और निष्पक्ष व्यापार की पक्ष समर्थन कर सकते हैं।

आत्मनिर्भर भारत की भावना सामूहिक लचीलापन और नवाचार के बारे में है। कृषि में इसका तात्पर्य है हर किसान की क्षमता को मुक्त करना, गांवों को समृद्धि का इंजन बनाना और यह सुनिश्चित करना कि कोई भी भारतीय भूखा न सोए।

जबकि हम 2047 की ओर देखते हैं, हमें यह भी अनुभव करना चाहिए कि एक विकसित भारत के बीज उसके खेतों में बोए जाएंगे। यदि हम आज अपने किसानों को सशक्त बनाते हैं, तो हम कल के लिये एक विकसित भारत सुनिश्चित करेंगे -जो न्यायपूर्ण, हरा-भरा और वास्तव में आत्मनिर्भर होगा।